चौबीसवें

चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरस्सरः।
राज्ञो दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः॥ १२१

त्रेतायुगमें भगवान् विष्णु राजा दशरथके पुत्र कमलनयन श्रीरामके रूपमें प्रकट हुए और कुछ कालतक विश्वामित्रके अनुयायी रहे॥ १२१॥

कृत्वाऽऽत्मानं महाबाहुश्चतुर्धा प्रभुरीश्वरः।
लोके राम इति ख्यातस्तेजसा भास्करोपमः॥ १२२

उस समय सर्वसमर्थ महाबाहु भगवान् अपनेको चार रूपोंमें प्रकट करके स्वयं श्रीराम नामसे विख्यात हुए। वे श्रीराम सूर्यके समान तेजस्वी थे॥ १२२॥

प्रसादनार्थं लोकस्य रक्षसां निधनाय च।
धर्मस्य च विवृद्ध्यर्थं जज्ञे तत्र महायशाः॥ १२३

महायशस्वी श्रीराम सब लोगोंको प्रसन्न रखने, राक्षसोंको मारने और धर्मकी वृद्धि करनेके लिये उस समय अवतीर्ण हुए थे॥ १२३॥

तमप्याहुर्मनुष्येन्द्रं सर्वभूतपतेस्तनुम्।
यस्मै दत्तानि चास्त्राणि विश्वामित्रेण धीमता॥ १२४

वधार्थं देवशत्रूणां दुर्धराणि सुरैरपि।
यज्ञविघ्नकरो येन मुनीनां भावितात्मनाम्॥ १२५

मारीचश्च सुबाहुश्च बलेन बलिनां वरौ।
निहतौ च निराशौ च कृतौ तेन महात्मना॥ १२६

वर्तमाने मखे येन जनकस्य महात्मनः।
भग्नं माहेश्वरं चापं क्रीडता लीलया पुरा॥ १२७

यः समाः सर्वधर्मज्ञश्चतुर्दश वनेऽवसत्।
लक्ष्मणानुचरो रामः सर्वभूतहिते रतः॥ १२८

रूपिणी यस्य पार्श्वस्था सीतेति प्रथिता जनैः।
पूर्वोचिता तस्य लक्ष्मीर्भर्तारमनुगच्छति॥ १२९

चतुर्दश तपस्तप्त्वा वने वर्षाणि राघवः।
जनस्थाने वसन् कार्यं त्रिदशानां चकार ह॥ १३०

सीतायाः पदमन्विच्छँल्लक्ष्मणानुचरो विभुः।
विराधं च कबन्धं च राक्षसौ भीमविक्रमौ।
जघान पुरुषव्याघ्रौ गन्धर्वौ शापवीक्षितौ॥ १३१

हुताशनार्केन्दुतडिद्घनाभैः
प्रतप्तजाम्बूनदचित्रपुङ्खैः।
महेन्द्रवज्राशनितुल्यसारैः
शरैः शरीरेण वियोजितौ बलात्॥ १३२

सुग्रीवस्य कृते येन वानरेन्द्रो महाबलः।
वाली विनिहतो युद्धे सुग्रीवश्चाभिषेचितः॥ १३३

देवासुरगणानां हि यक्षगन्धर्वभोगिनाम्।
अवध्यं राक्षसेन्द्रं तं रावणं युद्धदुर्मदम्॥ १३४

युक्तं राक्षसकोटीभिर्नीलाञ्जनचयोपमम्।
त्रैलोक्यरावणं घोरं रावणं राक्षसेश्वरम्॥ १३५

ज्ञानी पुरुष उन नरेन्द्र श्रीरामको समस्त भूतोंके स्वामी भगवान् विष्णुका अवतार-विग्रह बताते हैं, जिन्हें परम बुद्धिमान् विश्वामित्रजीने देव-द्रोही असुरोंका वध करनेके लिये ऐसे दिव्यास्त्र प्रदान किये थे, जिन्हें धारण करना देवताओंके लिये भी कठिन था। महात्मा श्रीरामने पवित्र अन्तःकरणवाले मुनियोंके यज्ञमें विघ्न डालनेवाले बलवानोंमें श्रेष्ठ मारीच और सुबाहुको अपने बाणोंका निशाना बनाया और उनकी आशा पूर्ण होने नहीं दी॥ १२४—१२६॥ पूर्वकालमें जब महात्मा राजा जनकके यहाँ यज्ञ हो रहा था, उस समय उन्हीं श्रीरामने खेल-सा करते हुए महादेवजीके धनुषको अनायास ही तोड़ डाला था॥ १२७॥ वे सम्पूर्ण धर्मोंके ज्ञाता तथा समस्त प्राणियोंके हितमें तत्पर रहनेवाले थे। उन्होंने लक्ष्मणको साथ ले चौदह वर्षोंतक वनमें निवास किया॥ १२८॥ उस समय उनके साथ मूर्तिमती लक्ष्मी भी थीं, जो लोगोंमें 'सीता' के नामसे प्रसिद्ध थीं। वे उनकी पूर्वोचित पत्नी थीं और पतिके पीछे-पीछे वनमें गयी थीं॥ १२९॥ चौदह वर्षोंतक वनमें तपस्या करके जनस्थानमें निवास करते हुए रघुनन्दन श्रीरामने देवताओंका अभीष्ट कार्य सिद्ध किया॥ १३०॥ उन भगवान् श्रीरामने (रावणके द्वारा अपहृत) सीताका पता लगाते हुए लक्ष्मणके साथ जाकर भयानकपराक्रमी राक्षस विराध और कबन्धको मार डाला। वे दोनों वास्तवमें पुरुषसिंह गन्धर्व थे, किंतु शाप-ग्रस्त होकर राक्षस हो गये थे॥ १३१॥ इन राक्षसोंपर श्रीरामचन्द्रजीने ऐसे बाणोंद्वारा प्रहार किया, जो अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, बिजली और मेघके समान प्रकाशित होते थे, जिनके विचित्र पङ्ख तपाये हुए जाम्बूनद नामक सुवर्णके बने हुए थे और जो इन्द्रके वज्र तथा विद्युत्के समान शक्तिशाली थे। उन बाणोंद्वारा उन्होंने बलपूर्वक उन दोनों राक्षसोंको शरीरसे विलग कर दिया॥ १३२॥ श्रीरामने अपने मित्र सुग्रीव (-की भलाई)-के लिये युद्धमें महाबली वानरराज बालीको मार डाला और उसके राज्यपर सुग्रीवका अभिषेक कर दिया॥ १३३॥ उन दिनों राक्षसराज रावण देवता, असुर, यक्ष, गन्धर्व और नागोंके लिये अवध्य हो रहा था। युद्धमें वह उन्मत्त होकर लड़ता था। करोड़ों राक्षस उसके सहायक थे। उसका शरीर काले अञ्जनके ढेरके समान था। त्रिलोकीको रुलानेवाला वह भयंकर राक्षसराज रावण दुर्जय और दुर्द्धर्ष था॥ १३४-१३५॥

दुर्जयं दुर्धरं दृप्तं शार्दूलसमविक्रमम्।
दुर्निरीक्ष्यं सुरगणैर्वरदानेन दर्पितम्॥ १३६

जघान सचिवैः सार्द्धं ससैन्यं रावणं युधि।
महाभ्रघनसंकाशं महाकायं महाबलम्॥ १३७

तमागस्कारिणं घोरं पौलस्त्यं युधि दुर्जयम्।
सभ्रातृपुत्रसचिवं ससैन्यं क्रूरनिश्चयम्॥ १३८

रावणं निजघानाशु रामो भूतपतिः पुरा।
मधोश्च तनयो दृप्तो लवणो नाम दानवः॥ १३९

हतो मधुवने वीरो वरदृप्तो महासुरः।
समरे युद्धशौण्डेन तथा चान्येऽपि राक्षसाः॥ १४०

एतानि कृत्वा कर्माणि रामो धर्मभृतां वरः।
दशाश्वमेधाञ्जारूथ्यानाजहार निरर्गलान्॥ १४१

नाश्रूयन्ताशुभा वाचो नाकुलं मारुतो ववौ।
न वित्तहरणं त्वासीद् रामे राज्यं प्रशासति॥ १४२

पर्यदेवन्न विधवा नानर्थाश्चाभवंस्तदा।
सर्वमासीज्जगद् दान्तं रामे राज्यं प्रशासति॥ १४३

न प्राणिनां भयं चापि जलानलनिघातजम्।
न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते॥ १४४

ब्रह्म पर्यचरत् क्षत्रं विशः क्षत्रमनुव्रताः।
शूद्राश्चैव हि वर्णांस्त्रीञ्छुश्रूषन्त्यनहंकृताः।
नार्यो नात्यचरन् भर्तॄन् भार्या नात्यचरत् पतिः॥ १४५

सर्वमासीज्जगद् दान्तं निर्दस्युरभवन्मही।
राम एकोऽभवद् भर्त्ता रामः पालयिताभवत्॥ १४६

उसका पराक्रम सिंहके समान था। उसका घमंड बहुत बढ़ा हुआ था। वरदानके कारण वह और भी घमंडी हो गया था। देवताओंके लिये उसकी ओर देखना भी कठिन था। उसका शरीर मेघोंकी घटाके समान काला था। भगवान् श्रीरामने उस महाकाय महाबली रावणका युद्धमें मन्त्रियों तथा सेनाओंसहित संहार कर डाला॥ १३६-१३७॥ पुलस्त्य-पौत्र रावण भयानक अपराधी था, उसका प्रत्येक निश्चय क्रूरतासे पूर्ण होता था; युद्धमें उसपर विजय पाना कठिन था तो भी सम्पूर्ण भूतोंके पालक भगवान् श्रीरामने पूर्वकालमें उसे भाई, पुत्र, मन्त्री और सेनाओंसहित शीघ्रतापूर्वक मार डाला। उन्हीं दिनों मधुवन (मथुरा)-में लवण नामक दानव रहता था, जो मधुका पुत्र था। वह महान् असुर वीर तो था ही, मनोवाञ्छित वर पा जानेके कारण और भी घमंडमें भर गया था। वह श्रीरामके ही स्वरूपभूत शत्रुघ्नके हाथसे मारा गया। युद्धकुशल श्रीराम (तथा उनके भाइयों)-ने समराङ्गणमें और भी बहुत-से राक्षसोंका संहार किया॥ १३८—१४०॥ इन सब (पराक्रमपूर्ण) कर्मोंका सम्पादन करके धर्मात्माओंमें श्रेष्ठ श्रीरामने तीनगुनी दक्षिणासे युक्त दस अश्वमेध यज्ञ किये जो बिना किसी विघ्न-बाधाके पूर्ण हो गये॥ १४१॥ श्रीरामचन्द्रजी जब राज्यका शासन करते थे, उन दिनों कहीं अशुभ बातें नहीं सुनी जाती थीं, वायु प्रचण्ड वेगसे नहीं चलती थी तथा कोई किसीके धनका अपहरण नहीं करता था॥ १४२॥ श्रीरामके राज्य-शासनकालमें कभी विधवाओंका करुण क्रन्दन नहीं सुना गया। कहीं भी अनर्थपूर्ण घटनाएँ नहीं घटित हुईं। सारे जगत्के लोग (मन और इन्द्रियोंका संयम रखकर) विनीत एवं अनुशासित रहते थे॥ १४३॥ श्रीरामके राज्यकालमें प्राणियोंको जल और अग्निसे मृत्युका भय कभी नहीं होता था और बूढ़ोंको बालकोंकी प्रेतक्रिया नहीं करनी पड़ती थी॥ १४४॥ क्षत्रिय ब्राह्मणोंकी परिचर्या करते थे, वैश्य क्षत्रियोंके प्रति श्रद्धा रखते थे और शूद्र अहंकार छोड़कर ब्राह्मण आदि तीनों वर्णोंकी सेवा करते थे। श्रीरामके राज्यमें स्त्रियाँ अपने पतिको छोड़कर दूसरे किसी पुरुषमें आसक्त नहीं होती थीं और पुरुष भी अपनी पत्नीके सिवा दूसरी किसी स्त्रीपर आसक्तिपूर्ण दृष्टि नहीं डालते थे॥ १४५॥ उस समय सारा जगत् जितेन्द्रिय था। पृथ्वीपर डाकुओंका कहीं नाम भी नहीं था। एकमात्र श्रीराम ही सबके स्वामी और संरक्षक थे॥ १४६॥

आयुर्वर्षसहस्राणि तथा पुत्रसहस्त्रिणः।
अरोगाः प्राणिनश्चासन् रामे राज्यं प्रशासति॥ १४७

देवतानामृषीणां च मनुष्याणां च सर्वशः।
पृथिव्यां समवायोऽभूद् रामे राज्यं प्रशासति॥ १४८

गाथा अप्यत्र गायन्ति ये पुराणविदो जनाः।
रामे निबद्धतत्त्वार्था माहात्म्यं तस्य धीमतः॥ १४९

श्यामो युवा लोहिताक्षो दीप्तास्यो मितभाषिता।
आजानुबाहुः सुमुखः सिंहस्कन्धो महाभुजः॥ १५०

दश वर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च।
अयोध्याधिपतिर्भूत्वा रामो राज्यमकारयत्॥ १५१

ऋक्सामयजुषां घोषो ज्याघोषश्च महात्मनः।
अव्युच्छिन्नोऽभवद्राज्ये दीयतां भुज्यतामिति॥ १५२

सत्त्ववान् गुणसम्पन्नो दीप्यमानः स्वतेजसा।
अति चन्द्रं च सूर्यं च रामो दाशरथिर्बभौ॥ १५३

ईजे क्रतुशतैः पुण्यैः समाप्तवरदक्षिणैः।
हित्वायोध्यां दिवं यातो राघवः समहाबलः॥ १५४

एवमेष महाबाहुरिक्ष्वाकुकुलनन्दनः।
रावणं सगणं हत्वा दिवमाचक्रमे प्रभुः॥ १५५

श्रीरामके शासनकालमें मनुष्योंकी आयु हजारों वर्षकी होती थी। वे सहस्रों पुत्रोंके पिता होते थे और किसी भी प्राणीको रोग नहीं सताता था॥ १४७॥ भगवान् श्रीराम जब यहाँ राज्यशासन करते थे, उन दिनों इस भूतलपर देवता, ऋषि और मनुष्योंका सब ओर समागम होता रहता था॥ १४८॥ श्रीरामके विषयमें 'वे ही परम तत्त्व हैं' ऐसी दृढ़ आस्था रखनेवाले पुराणवेत्ता पुरुष इस प्रसङ्गमें निम्नाङ्कित गाथाएँ गाया करते हैं, जो उन बुद्धिमान् श्रीरघुनाथजीके माहात्म्यको सूचित करती हैं—॥ १४९॥ 'श्रीरामचन्द्रजीका वर्ण श्याम था, वे सदा तरुण दिखायी देते थे, उनके नेत्र (कुछ-कुछ) लालिमा लिये हुए थे, मुखसे तेज बरसता रहता था, वे बहुत कम बोलते थे, उनकी लम्बी भुजाएँ घुटनोंतक पहुँचती थीं, उनका मुख बड़ा सुन्दर था, कंधे सिंहके-से जान पड़ते थे, महाबाहु श्रीरामने अयोध्याके अधिपति होकर ग्यारह हजार वर्षोंतक राज्य किया था॥ १५०-१५१॥ उनके राज्यमें सदा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेदका घोष सुनायी देता था। धनुषकी प्रत्यञ्चा खींचनेसे उसकी टंकार-ध्वनि भी सदा श्रवणगोचर होती रहती थी तथा दान देने और भोजन करानेका उपदेश कभी बंद नहीं होता था॥ १५२॥ दशरथनन्दन श्रीराम सत्त्ववान् और गुणवान् होनेके साथ ही सदा अपने तेजसे देदीप्यमान रहते थे। उनकी सूर्य और चन्द्रमासे भी अधिक शोभा होती थी॥ १५३॥ श्रीरघुनाथजीने पर्याप्त एवं उत्तम दक्षिणाओंसे युक्त सैकड़ों पवित्र यज्ञोंका अनुष्ठान किया था। अन्तमें वे अयोध्याके महान् जन-समुदायको साथ ले अपनी उस पुरीको छोड़कर साकेत धामको पधारे'॥ १५४॥ इस प्रकार इक्ष्वाकुकुलका आनन्द बढ़ानेवाले ये महाबाहु भगवान् श्रीराम दलबलसहित रावणका संहार करके अपने परमधामको चले गये॥ १५५॥